| | |
|---|---|
| | **बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय**<br>**बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)**<br>**Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)** |
| **मौसम आधारित कृषि सलाह**<br>(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 135 /2025) Year: 7th | |
| **जिला: बाँदा** | **जारी करने की तिथि: 13.08.2025** |

---

| क्रम सं | विभाग | सलाह |
|---|---|---|
| 1- | **शाक-भाजी** | ➢ उठी हुई मेड़ियों पर अथवा उठी हुई क्यारियों में कद्‌दू वर्गीय फसलों यथा लौकी, करेला, खीरा, तरोई, आदि, भिंडी, लोबिया, ग्वार, चौलाई की बुआई कर दें।<br>➢ खरपतवार एवं मृदानमी के सफल प्रबंधन हेतु मेड़ियों को काली पॉलीथिन से ढकना चाहिए।<br>➢ कद्‌दू वर्गीय सब्जियों की लताओं को पंडाल सदृश संरचना बनाकर ऊपर चढ़ा दें।<br>➢ बैगन, टमाटर, मिर्च की नर्सरी डाल दें तथा खड़ी फसलों में खरपतवार प्रबंधन करें।<br>➢ मिर्च, टमाटर, बैगन, भिंडी में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। |
| | | |
| 2- | **शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन** | **शस्य-प्रबंधन**<br>कृषि उत्पादन में मौसम की **मुख्य** भूमिका होती है। कृषि उत्पादन की सफलता सामन्य मानसून एवं अनुकूल मौसम पर निर्भर करती है। बीजों के अंकुरण से लेकर पकने तक एक उपयुक्त मौसम की जरूरत पड़ती है जो कम से कम एक निश्चित अवधि तक होनी चाहिए।<br>➢ इस मौसम में बोवाई के लिये दो बरसात के बीच कम अन्तराल होने के कारण कम समय मिल पाता है।<br>➢ इस मौसम में बोई गयी फसलों को विशेष रखरखाव की जरूरत होती है।<br>➢ अधिक वर्षा की दशा में उपयुक्त जल निकास की व्यवस्था करनी चाहिए।<br>➢ अधिक वर्षा के कारण उगे हुये पौधे स्थिर नहीं हो पाते और कभी कभी वे नष्ट हो जाते है। ऐसी दशा में पुनः बोआई किया जाना आवश्यक होता है।<br>➢ बुवाई के प्रथम एक माह तक खरपतवार का उपयुक्त प्रबंधन करना चाहिए।<br>➢ सीजन के मध्य में वर्षा बंद हो जाने की दशा में कम अवधि की कम पानी चाहनेवाले फसलों का चयन करें<br>➢ श्रीअन्न फसलों की बुबाई का काम शीघ्र पूर्ण कर लें।<br>➢ जल निकास की समुचित व्यवस्था रखें।<br>➢ धान आदि फसलों में बोआई/ रोपाई के तुरन्त बाद यदि खरपतवार नाशी का प्रयोग नही किया जा सका हो तो बोआई /रोपाई के **25-30** बाद कुछ चयनित खरपतवारनाशी जैसे कि नोमनी गोल्ड **25** ग्राम सक्रिय तत्व का प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें।<br>➢ पायराजो सल्फ्यूरॉन नामक दवाई का रोपाई के **2** से **3** सप्ताह के मध्य **25** ग्राम सक्रिय तत्व का प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें।<br>➢ छिड़काव हमेशा फ्लैट फैन नोजल की सहायता से करें ।<br>खरपतवार नाशी का प्रयोग हमेशा पर्याप्त मृदा नमी की दशा में ही करें। |

| | | |
|---|---|---|
| | | **मृदा-प्रबंधन**<br>➢ खरीफ में बोई गई दलहन, तिलहन फसलों एवं धान फसल में बची हुई नत्रजन उर्वरकों की मात्रा का प्रयोग करें।<br>➢ वर्षा के दौरान होने वाले मृदा क्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु अपने – अपने खेतो का मेड बंधान लगातार करतें रहें।<br>➢ फासफोरस एवं पोटाष की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय तथा नत्रजन की षेष मात्रा खडी फसल में प्रयोग करें।<br>➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।<br>➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।<br>➢ वर्षा के दौरान जिन भी किसान भाईयों के फसल वाले खेतों में पानी भर गया है उसका अविलम्ब निकास करने का प्रयत्न करें। |
| | | |
| 3- | **पशुपालन प्रबंधन** | मुर्गीपालन से जुड़े किसानो को भी वर्षा ऋतू में अपनी मुर्गियों तथा उनके चूजों का खास ध्यान रखना चाहिए तथा निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए.<br>➢ वर्षा ऋतु में गंदे पानी को पीने से पेट के कीड़े तथा परजीवियों का प्रकोप अधिक रहता है इसके उपचार व बचाव के लिए अन्तः परजीवी नाशक दवाई अवश्य वर्षा ऋतू में मुर्गियों को देनी चाहिए।<br>➢ अंडा देने वाली मुर्गियों के लिए इस ऋतू में हीटर व बल्ब आवश्यक हैं जिससे उनके अंडे देने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।<br>➢ मुर्गियों के रखने के स्थान पर नमी बढ़ने से कई संक्रामक बीमारियां बढ़ती हैं जिसकी रोकथाम हेतु नमी को दूर करने का प्रबंध मुर्गी शेड में करना चाहिए।<br>➢ मुर्गियां वर्षा ऋतू में अपनी शारीरिक पूर्ति हेतु ज्यादा भोजन की आवश्यकता प्रकट करती हैं इस हेतु मुर्गी पालकों को अधिक दानेदार भोजन मुर्गियों को उपलब्ध कराना चाहिए।<br>➢ मुर्गियों का टीकाकरण भी वर्षा ऋतू में फैलने वाली संक्रामक बीमारियों से बचाव हेतु आवश्यक है। |
| 4– | **कीट-प्रबंधन** | ➢ धान में पत्ती लपेटक के नियंत्रण हेतु खेत की निगरानी कर प्राकृतिक शत्रुओं (परभक्षी) का फसल वातावरण में संरक्षण करें। क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.25 ली0 प्रति0 हे0 की दर से छिड़काव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली के घोल का छिड़काव करें अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 1–2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। |

| | | |
|---|---|---|
| | | ➢ मक्का / ज्वार / बाजरा में प्ररोह मक्खी के प्रभावी क्षेत्रों में मृत गोभ दिखाई देते ही प्रकोपित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिये। कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.5 लीटर रसायन को प्रति हे0 की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु फसल की साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये। कीट के नियंत्रण हेतु 5–10 ट्राइको कार्ड प्रति हे0 की दर से प्रयोग करना चाहिये। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा को प्रति हे0 की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।<br>➢ मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें।<br>➢ उर्द / मूँग में रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी की रोकथाम के लिये पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें व इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।<br>➢ बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रैप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। |
| 5– | **पादप रोग प्रबंधन** | अगस्त माह मे बीच वर्षा ऋतु सक्रिय होती है, जिससे अद्रता में वृद्धि होती है। यह समय कई फसलों में रोगों के प्रकोप के लिए अनुकूल होता है। निम्नलिखित सलाहों का पालन करके आप अपनी फसलों को रोगों से बचा सकते हैं:<br>**धान:**<br>**संभावित रोग:** झुलसा भूरा धब्बा बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट<br>**प्रबंधन:** खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था रखें।<br>• कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 1 ग्राम/लीटर या ट्राइसाइक्लोज़ोल 75% WP @ 0.6 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।<br>• पत्तियों पर पीले व भूरे धब्बे दिखें तो स्टेप्रोमाइसिन + टेट्रासाइक्लिन 100 ग्राम/एकड़ या कासुगामाइसिन 3% SL @ 300 मिली/एकड़ का छिड़काव करें।<br>**सोयाबीन:**<br>**संभावित रोग:** जीवाणु झुलसा एन्थ्रेक्नोज फफूंदजनित पत्ता झुलसा<br>**प्रबंधन:**<br>• फसल को जरूरत से अधिक नमी से बचाएं।<br>• क्लोरोथालोनिल 75% WP @ 2.5 ग्राम/लीटर या हैक्साकोनाजोल 5% SC @ 1 मिली/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।<br>• रोग प्रारंभिक अवस्था में दिखे तो 10-15 दिनों के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें।<br>**उड़द व मूंग:**<br>**संभावित रोग:** वेब ब्लाइट पत्तियों का झुलसा<br>**प्रबंधन:**<br>• रोगग्रस्त पौधों को खेत से निकाल दें। |

| | | |
|---|---|---|
| | | • कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% WP @ 2 ग्राम/लीटर या फ्लुक्सापायरोक्साड + पाय्राक्लोस्ट्रोबिन (प्राक्सोर) @ 1 मिली/लीटर छिड़काव करें।<br>**तिलहन (सरसों की नर्सरी, तिल):**<br>**संभावित रोग:** डैम्पिंग-ऑफ एल्टरनेरिया पत्ताभेद<br>**प्रबंधन:**<br>• बीजोपचार अवश्य करें: थायरम या कार्बेन्डाजिम @ 2.5 ग्राम/किग्रा बीज।<br>• रोग दिखने पर मैनकोजेब @ 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।<br>• खेत में जलभराव न होने दें।<br>**सामान्य सुझाव:**<br>• खेतों में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।<br>• फसलों का अवशेष खेत में न छोड़ें, रोगजनकों का स्रोत बन सकते हैं।<br>• जैविक नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम या पेसिलोमाइसिस का प्रयोग मिट्टी या बीज उपचार में करें।<br>• मौसम के अनुसार समय पर छिड़काव करें। |
| | | |
| 6. | **बागवानी. प्रबंधन** | **फलो में पौधरोपण :**<br>अगस्त माह में प्रायः एक दो अच्छी बारिश होती है तथा वातावरण में नमी की मात्रा काफी होती है, यह समय किन्नू, माल्टा, अमरूद तथा पपीता जैसे फलवृक्ष लगाने का उत्तम समय है। परन्तु ध्यान रहे कि फलपौध उत्तम दर्जे का ही हों। पौधों को निर्धारित स्थान पर उतना ही गाड़े जितना वे नर्सरी में थे। पौधों की देख – रेख अच्छी प्रकार से करें। मूलवृन्त पर नये फुटान को हटा दें तथा पौधों को सीधा रखने के लिए बनछटी का प्रयोग करें। नियमित सिंचाई करें।<br>**वायु अवरोधक :**<br>वायु अवरोधकों को उत्तर – पष्चिम दिशा में इसी माह में लगायें। यदि इन्हें बाग के चारों और लगाया जायें तो और अच्छा होगा। अर्जुन, आंवला, देशी जामुन, देषी देशी आम के पौधे इस क्षेत्र के लिए उत्तम वायु अवरोधक है। वायु अवरोधकों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए बडे पौधों के मध्य या दूसरी पंक्ति में छोटे आकार के पौधे जैसी देशी बेर, जटटी–खटटी, करौंदा, शहतूत आदि लगायें। वायु अवरोधक वृक्षों की आपस मे दूरी 4–5 मीटर रखें। इन वृक्षों की जड़ों को मुख्य बाग में जाने से रोकने के लिए 1 से 1.5 मीटर गहरी खाई इन वृक्षों के पास बाग की और खोद दें।<br><br>**नर्सरी के कार्य**<br>➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए आम के गुठलियों का रोपण नर्सरी में करना चाहिए<br>➢ आम अमरूद मे विभेद कलम प्रवर्धन करना चाहिए<br>➢ आम में साईड ग्राटिंग का कार्य करना चाहिए<br>➢ मूलवृन्त तैयार करने हेतु रंगपुर लाइम , जट्टी – खट्टी के बीज की बुवाई नर्सरी में करें । बिजाई से पूर्व बीजे को 52 सेटीग्रेड तापमान वाले पानी से दस मिनट तक उपचारित करें, ताकि फॅाइटोफथोरा बीमारी से बच जा सकें।<br><br>**आम**<br>सिल्ली कीट की रोकथाम के लिए 5–10 अगस्त के बीच एजाडीरेक्टिन 3000 पीपीएम ताकत का 2 मिली लिटर को पानी में घोलकर 10–15 दिनों के अंतराल पर 3 छिड़काव करें । कीट प्रभावित टहनियों के नुकीली गाँठो की छंटाई करें ।<br>**पपीता**<br>कॉलर रॉट के प्रकोप से पौधे जमीन के सतह से ठीक ऊपर गल कर गिर जाते है । इसके नियंत्रण के लिए पौधशाला से पौधों को रिडोमिल (2 ग्रा./ली.) दवा का छिड़काव करें, खेत में जलभराव न होने दें और जरूरत पड़ने पर खड़ी फल में भी रिडोमिल (2 ग्रा./ली.) के घोल से जल सिंचन करें ।<br>**केला** |

| | | |
|---|---|---|
| | | पनामा विल्ट के रोकथाम के लिए बैविस्टीन के 1.5 मिली. ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से पौधों के चारों तरफ की मिट्टी को 20 दिन के अंतराल से दो बार छिड़काव कर देना चाहिए ।<br>**अमरुद**<br>जस्ता तत्व की कमी होने से पत्तियों का पिला पड़ना, छोटा होना तथा पौधों की बढ़वार कम हो जाने के लक्षण मिलते है । इसके नियंत्रण के लिए 2 प्रतिशत जिंक सल्फेट का छिड़काव अथवा 300 ग्रा. जिंक सल्फेट का पौधों की जड़ों में देना लाभप्रद पाया गया है ।<br>**कटहल**<br>तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु छिद्र को किसी पतले तार से साफ करके नुवाक्रान का घोल (10 मिली.ली.) अथवा पेट्रोल या केरोसिन तेल के चार–पाँच बूंद रुई में डालकर गीली चिकनी मिट्टी से बंद कर दें । इस प्रकार वाष्पीकृत गंध के प्रभाव से तना बेधक कीट मर जाते हैं एवं तने में बने छिद्र धीरे–धीरे भर जाते हैं । |
| 7. | **वानिकी प्रबंधन** | ➢ पौधशाला को खरपतवार से मुक्त रखने तथ जल निकासी नालियों/चैनलों को साफ रखें।<br>➢ पौधशाला में आद्रपतन या कमरतोड रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम (10ग्राम)+मेन्कोजेब(25ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल से रोक के लक्षण दिखते ही सिंचाई करें।<br>➢ जून / जुलाई माह में रोपित पौध, जो कि मृत हो गए हैं, स्वस्थ पौधों से प्रत्यारोपित करें।<br>➢ रोपित पौधें के थालों में निराई गुड़ाई करें तथा साथ ही साथ उजागर जड़ों को पुनः मिट्टी से आच्छादित करें। |

## वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

| | |
|---|---|
| 1. डॉ जी. एस. पंवार | 7. डॉ दिनेश गुप्ता |
| 2. डॉ दिनेश साह | 8. डॉ पंकज कुमार ओझा |
| 3. डॉ ए.सी. मिश्रा | 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह |
| 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव | 10. डॉ जगन्नाथ पाठक |
| 5. डॉ राकेश पाण्डेय | 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार |
| 6. डॉ मयंक दुबे | |